2015-16

ISSN 0976-0377
RNI.MAHMUL02805/2010/33461

International Registered and Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

CHIEF EDITOR

DR. BALAJI KAMBLE

Scanned with CamScanner

2015-16

प्रा. गायके

RNI. MAHMUL02805/2010/33461

Impact Factor - 2.06

ISSN 0976-0377

International Registered & Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Vol. I, Issue : XII
Year - 6 (Half Yearly)
(July 2015 To Dec. 2015)

Editorial Office :
'Gyandeep',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 - 241913
09423346913,09637935252,
09503814000,07276301000

Website
www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com
drkamblebg@rediffmail.com

Publisher :
Jyotichandra Publication,
Latur, Dist. Latur.-415331
(M.S.) India

Price: ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Research Guide & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya, Latur, Dist. Latur (M.S.)
Mob. 09423346913, 9503814000

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Aloka Parasher Sen
Professor, Dept. of History & Classics,
University of Alberta, Edmonton,
(CANADA).

Dr. Huen Yen
Dept. of Inter Cultural
International Relation
Central South University,
Changsha City, (CHAINA)

Dr. Omshiva V. Ligade
Head, Dept. of History,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur. (M.S.)

Dr. G.V. Menkudale
Dept. of Dairy Science,
Mahatma Basweshwar College,
Latur, Dist. Latur.(M.S.)

Dr. Laxman Satya
Professor, Dept. of History,
Lokhevan University, Loheavan,
PENSULVIYA (USA)

Bhujang R. Bobade
Director, Manuscript Dept.,
Deccan Archaeological and Cultural
Research Institute,
Malakpet, Hyderabad (A.P.)

Dr. Sadanand H. Gone
Principal,
Ujwal Gramin Mahavidyalaya,
Ghonsi, Dist. Latur. (M.S.)

Dr. Balaji S. Bhure
Dept. of Hindi,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur (M.S.)

DEPUTY-EDITORS

Dr. Murlidhar Lahade
Dept. of Hindi,
Janvikas Mahavidyalaya,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Dr. C.J. Kadam
Head, Dept. of Physics
Maharashtra Mahavidhyalaya,
Nilanga, Dist. Latur (M.S.)

Veera Prasad
Dept. of Political Science,
S.K. University,
Anantpur, (A.P.)

Johrabhai B. Patel,
Dept. of Hindi,
S.P. Patel College,
Simaliya (Gujrat)

CO-EDITORS

Sandipan K. Gaike
Dept. of Sociology,
Vasant College,
Kej, Dist. Beed (M.S.)

Ambuja N. Malkhedkar
Dept. of Hindi
Gulbarga, Dist. Gulbarga,
(Karnataka State)

Dr. Shivaji Vaidya
Dept. of Hindi,
B. Raghunath College,
Parbhani,Dist. Parbhani.(M.S.)

Dr. Shivanand M. Giri
Dept. of Marathi,
B.K. Deshmukh College,
Chakur Dist. Latur.(M.S.)

Scanned with CamScanner

RNI. MAHMUL02805/2010/33461
Interlink Research Analysis
Impact Factor - 2.06
ISSN 0976-0377
Vol. I, Issue:XII, July 2015 To Dec. 2015

INDEX

Sr. No.	Title of Research Paper	Author(s)	Page No.
1	Impact of Globalization on Marathwada Region	Dr. P. T. Pawar	1-4
2	Lending operations of Urban Co-operative Banks in Sangli District	Kishor Baburao Jadhav	5-12
3	Studies on Effect of Storage Temperature on Colour and Appearance Score of Shridkhandawadi	Dr. S. B. Wadekar	13-17
4	Micro Finance Through Shgs: Banking with the Unbankable	Sanket Pednekar	18-21
5	Women Entrepreneurship as a Key Driver in National Development	Dr. R. K. Shaikh	22-28
6	India's Grapes Economy	Dr. Mahendra B. Bagul	29-36
7	Elationship Between Will Towinand Sports Competitive Anxiety of Inter University Cricket Players	Dr. R. S. Ramteke	37-40
8	Impact of Information and Communication Technology in Physical Education and Sports	Mahadeo S. Suryawanshi	41-44
9	हिंदी कहानियों में वर्तमान समस्याएँ	मोहिनी रणजित कुटे	45-50
10	संजीव की 'अपराध' कहानी में पुलिस एंव न्याय-व्यवस्था का सच	आर. डी. गवारे	51-54
11	भारतातील भाववाढ : एक समस्या	डॉ. उत्तम डी. कदम	55-60
12	भारतातील भ्रष्टाचार आणि काळा पैसा	डॉ. बालाजी कांबळे	61-67
13	महात्मा बसवेश्वर व संत कबीर यांचा सामाजिक दृष्टीकोन	डॉ. राजशेखर जी. डिगे	68-74
14	मराठी नवकथेतील प्रयोगशिलता	डॉ. शिवानंद एम.	75-78

Scanned with CamScanner

RNI. MAHMUL02805/2010/33461
Interlink Research Analysis
IMPACT FACTOR 2.06
ISSN 0976-0377
Vol. I, Issue : XII, July 2015 To Dec. 2015

संजीव की 'अपराध' कहानी में पुलिस एंव न्याय-व्यवस्था का सच

आर. डी. गवारे
हिन्दी विभाग,
अ.र.भा. गरुड कला, वाणिज्य एवं विज्ञान
महाविद्यालय, शेंदुर्णी, जि. जलगाँव

10 Research Paper - Hindi

साहित्यकार अपनी लेखनी से सच को समाज के सामने लाता है जिससे समाज को सही दिशा मिल सके। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। साहित्यकार सबसे पहले एक नागरिक होता है, उसकी सामाजिक एंव राष्ट्रीय जिम्मेदारीयाँ होती है। जहाँ पर भी उसे अमानवीय व्यवहार, शोषण, पीडा दिखाई देती है वहाँ पर पूरी ताकत से अपनी कलम चलाता है। संजीव जी हिंदी के प्रसिध्द कथाकार है। उनके साहित्य में समाज के दलित, शोषीत, पीड़ित एवं सर्वहारा वर्ग का चित्रण देखने को मिलता है। वे सबके रहने लायक समता, न्यायपूर्ण और शोषणविहीन एक बेहतर दुनिया की रचना करना चाहते है। उनके साहित्य में शोषण तंत्र, नारी शोषण, माफिया - गुंडो का राज, भ्रष्ट पुलिस एवं भ्रष्ट न्यायव्यवस्था, मजदूरों की समस्याँए, दलित-आदिवासी शोषण, गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक शोषण आदि समस्याओं का चित्रण हुआ है। वे शोषकों के विरोध में एवं शोषितों के पक्ष में खडे है। उनका साहित्य मानवता के प्रति समर्पित है।

'तीस साल का सफरनामा' यह उनका प्रथम कहानीसंग्रह है। इसमें कुल नौ कहानियाँ संग्रहित है। प्रस्तुत कहानीसंग्रह में आजादी के तीस सालों में हासिल दु:ख और यातनाओं को चित्रित किंया है। साथ ही मजदूर वर्ग का शोषण, बेकारी का यथार्थ चित्रण किंया है। इस संग्रह की कहानियों के बारे में ज्योतिराम खड़े लिखते है, "संजीव की प्रस्तुत कहानियों में आतंकवाद, गरीबी, भूखमरी तथा आर्थिक परिस्थितीयों से जकड़ा निम्न मध्यवर्ग यथातथ्य सामने लाता है।"[1]

Scanned with CamScanner

संग्रह की प्रथम कहानी 'अपराध' है। मनुष्य को नक्साली बनाने वाली समाज व्यवस्था और पुलिस यंत्रणा का सच इस कहानी में प्रस्तुत हुआ है। भ्रष्ट पुलिस एवं भ्रष्ट न्यायव्यवस्था के कारण आम आदमी की हुई दुर्दशा को इस कहानी में प्रस्तुत किया गया है। कहानी का नायक सिध्दार्थ कॉलेज में नाम दाखिल करता है। वहाँ सचिन और संघमित्रा से मुलाकात होती है। संघमित्रा सचिन की बहन है। सचिन और संघमित्रा दोषी व्यवस्था से लड़ते है। यह व्यवस्था उन्हें नक्सली अपराधी घोषित करती है। सिध्दार्थ उनके प्रति सहानुभूति दिखाता है। उसके पिता जज, भाई एस. पी. जीलाधिश है। सचिन का मित्र सिध्दार्थ अपराधी की प्रकृति और प्रकार पर समाजशास्त्रीय शोध करना चाहता है। सचिन और संघमित्रा को पुलिस नक्सली मानकर अत्याचार करती है। संघमित्रा की मौत होती है और सचिन को फाँसी की सजा होती है। सिध्दार्थ पुलिस और न्यायव्यवस्था की भ्रष्टता को देखकर शोध कार्य करना छोड़ देता है। सचिन का मुकदमा सिध्दार्थ के पिता जिस अदालत में जज है उसी अदालत में चलनेवाला है। सिध्दार्थ अपने पिता से कहता है कि, "सचिन अपराधी नहीं है, मानवता के प्रति पूरी तरह निष्टावान युवक है।"[२] यह सुनकर जज पिता न्यायव्यवस्था की कमजोरी स्पष्ट करते हुए कहते है की, बेटे, "हम जिसे न्याय कहते है, वह तथ्य-सापेक्ष है, अत:निर्णय लचीला होता है। हमारा तो यूँ जान लो, बस एक दायरा होता है.... पुलिस एफ.आई.आर. प्रस्तुत करती है, चार्जशीट पेश करती हैं, अपराध के सबूत अभियुक्त की सफाई का दौर आता है, वकील होते हैं, कानून की किताबे होती हैं। इन सबमें से पर्त जो निष्कर्ष छन-छनकर आता है, हम वही निर्णय तो दे सकते हैं ..... और फिर तुम जिसकी सिफारिश करने आए हो उसका तो मुकाबला ही सत्ता से हैं, जो हमेशा न्यायपालिका पर हावी रहती हैं।"[३] इससे स्पष्ट होता है की, न्यायव्यवस्था बिक चुकी है। सत्य को न्याय नहीं मिलता। मुकदमे का निर्णायक दिन आ गया था। सचिन अपने बयान द्वारा स्वतंत्र भारत के न्यायव्यवस्था की पोख खोल देता है। वह कहता है की, "मुझे इस पूँजीवादी, प्रतिक्रियावादी, न्यायव्यवस्था में विश्वास नहीं है। आम जनता भी जिसे न्याय मिन्दर कहती हैं, वह लुटेरे पण्डों और जुताचोरों से भरा पड़ा है। यहाँ आते हीर चपरासी, अहलमद, नाजिर, पेशकार कानूनगो से लेकर कला लबादा ओढ़े वकील और गीता तथा गंगाजल की कसमें खाकर झूठी गवाहियाँ देनेवाले गवाह ये तमाम कुत्ते नोचने-खसोटने लगते है उसे। ये लाल थाने, लाल जेलखाने और लाल कचहरियाँ ... इन पर कितने बेकसुरों का खून पुता है। वकीलों और जजों का काला गाउन न जाने कितेने खून के धब्बों को छुपाए हुए है! परिवर्तन के महान रास्ते में एक मुकाम ऐसा भी आएगा जिस दिन इन्हें अपना चरित्र बदलना होगा वरना इनकी रोबीली बुलंदियाँ धूल चाटती नजर आएँगी!"[४] यहाँ पुलिस एवं न्यायव्यवस्था का सच प्रस्तुत हुआ है। जिसके पास सत्ता और पैसा है उसी को न्याय मिलता है। अपराध करनेवाले शान से घुम रहे है और निरपराध लोग सजा भुगत रहे है।

Scanned with CamScanner

पुलिस संघमित्रा के साथ घटिया व्यवहार करती है । जिससे उसकी मौत होती है । यहाँ डॉ. ऋषिकुमार चतुर्वेदी के विचार महत्वपूर्ण लगते है, - "पुलिस तंत्र पीड़कों को संरक्षण देता है और पीड़ितों को आरै धिक पीड़ित कर रहा है ।"[५] इससे स्पष्ट होता है की पुलिस जिनके लिए है उन्ही को नुकसान पहुँच रही है । रक्षक ही भक्षक बन गए हैं । 'सद् रक्षणाय खलनिग्रहणाय' इस ब्रीद पुलिस के संबंध में कितना सही है यह आज भी देखा जा सकता है । सिध्दार्थ जब रिसर्च के उदेश से थाने में जाता है तब एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी कहता है कि, "अमाँ, यार, हमी पर सारी तोहमतें क्यों ? हम नाचने वाले है, नचाने वाला कोई और हे ।"[६] यहाँ पुलिस द्वारा अपनी मज़बूरी को स्वीकार किया गया है । इससे स्पष्ट है की पुलिस पर भी नेताओं, अधिकारियों एवं गुंडो द्वारा दबाव डाला जाता है । सभी पुलिसवाले भ्रष्ट एवं बुरे नही होते । ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी अपनी जान की बाजी लगाते हुए देखे जा सकते है । लेकिन कुछ भ्रष्ट एवं देशद्रोही पुलिसवालों के कारण इस विभाग की प्रतिमा मलिन हो चुकी है । पुलिसवालों को कभी - कभी मजबुरी में भी बुरे लोगों का साथ देना पडता है । कहानी में एक इंस्पेक्टर द्वारा इसी मजबूरी को बताया गया है । वह कहता है की, "अरे, साब, सत्ता के इस थोड़े से सुख में हमने अपना क्या-क्या नहीं गँवाया... जाँती , धर्म इमान, सभ्यता, संस्कृति ... कहने को तो अपने थाने के सामने हमने भी लिखकर अँगवा दिया हैं - हम आपके सेवक है, हमारे योग्य कोई सेवा ? मगर सेवक की विनम्रता से काम करे तो हो गई छुट्टी । हमें ऑड, रयुड, क्रुड बनकर स्लैंग लैंग्वेजेज इस्तेमाल करनी पड़ती है, जल्लाद की तरह पेश आना पड़ता है । इसलिए एक अलग ही डिक्शनरी होती है हमारी, एक अलग ही आचार-संहिता होती है और एक अलग ही चरित्र होता है हमारा । सब-कुछ, अलिखित, पर व्यावहारिक !"[७] इससे स्पष्ट होता है कि, पुलिस भी किसी के हाथ का मोहरा है, उसका दुरुपयोग करनेवाली ताकतें अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी करवा सकती है ।

निष्कर्षत:

हम कह सकते हैं कि, संजीव जी ने 'तीस साल का सफरनामा' इस संग्रह के 'अपराध' कहानी मे हमारे भ्रष्ट तंत्र में एक आम आदमी किस तरह पिसता है उसका चित्र स्पष्ट किया है । अन्याय के विरुध्द आवाज उठानेवाला व्यक्ति आज की व्यवस्था का शिकार हो जाता है यह सचिन और संघमित्रा द्वारा दिखाया गया है । सिध्दार्थ को पछतावा होता है कि, अपने पिता जज, भाई एस. पी. होते हुए भी वह निर्दोष सचिन और संघमित्रा को बचा नहीं सका । संघमित्रा पुलिस के अत्याचार का शिकार होती है । सचिन को फाँसी की सजा सुनाई जाती है । इस कहानी के बारे में रविभूषण कहते हैं, "जो सत्ता और व्यवस्था मे है और उसके साथ हैं, वहो सबसे बड़ा अपराधी है " स्वतंत्र भारत में हिंदी की यह कहानी थी, जिसने स्पष्ट हैं, वहो सबसे बड़ा अपराधी है । स्वतंत्र भारत में हिंदी की यह कहानी थी, जिसने स्पष्ट और दो टूक स्वरों में वास्तविक अपराधी को सामने

Scanned with CamScanner

रखा।"[८] यहाँ हमारी सत्ता और व्यवस्था का खोकलापन आजादी के इतने सालों के बाद बदल न सकने की विवशता को बताया गया है। न जाने कितने बेकसूर सचिन और संघमित्रा हर रोज इस व्यवस्था के शिकार हो रहे हैं ? और कब तक होने रहेंगे ? यह सवाल आज भी बना हुआ है। इस कहानी के माध्यम से संजीव ने हमारी पुलिस एवं न्याय व्यवस्था का पर्दाफाश किया है।

संदर्भ संकेत

१. संपा. काशिद गिरीश - 'कथाकार संजीव', पृ. १९८
२. संजीव - 'संजीव की कथा यात्रा' - पहला पड़ाव, पृ. ८७
३. "वही", - पृ. ८७-८८
४. "वही", - पृ. - ८८
५. डॉ. - ऋषिकुमार चतुर्वेदी - हिंदी कहानी एक दशक - पृ. १८
६. संजीव - "संजीव की कथा यात्रा" - पहला पड़ाव, पृ. ८४
७. "वही", - पृ. ८५
८. संपा. ज्ञानरंजन - पहल, फ़रवरी - २०००, पृ. १२

लेखकांसाठी महत्त्वाच्या सुचना

१) आपले मौलिक शोधनिबंध ते आम्ही सुचविलेल्याच नमुन्यामध्ये टायपिंग करून, त्याची एक प्रिंट कॉपी व एक सी. डी. फॉर्म सोबत द्यावी किंवा ई-मेलवर पाठवावी.

२) मराठी व हिन्दी भाषेसाठी **DVB-TTYogesh (Font size - 14)** चा वापर करावा.

३) इंग्रजी भाषेसाठी **Times New Roman (Font size - 12)** चा वापर करावा.

४) शोध निबंध हे सारांश आराखडा (Abstracts), Key words, Introduction, Objectives, Central Idea, Conclusion, Suggestion, Summery & References या प्रमाणे असावेत. आवश्यकतेनुसार नकाशे, टेबल व आलेखांचा वापर करावा.

५) आदर्श संदर्भ सूची ही पुढीलप्रमाणे असावी -
Authors Name, Edition (in Bracket), Book Name, Publication, Vol. No. Page No. या स्वरूपात असावी.

६) **शोधनिबंधासोबत आपला शिकवित असलेल्या विषयाचे नाव, विभागाचे नाव, महाविद्यालयाचा पूर्ण पत्ता, घरचा पूर्ण पत्ता, पिन कोड, फोन, मोबाईल, ई- मेल द्यावा ही विनंती**

वरील सुचनांचे काटेकोरपणे पालन करून संपादक मंडळाला सहकार्य करावे, ही विनंती.

Scanned with CamScanner

RNI. MAHMUL02805/2010/33461

Owned, Published, Printed & Edited by Dr. Balaji Kamble at Jyotichandra Printing & Binding Pvt. Ltd., LIC colony, Latur and Published at "Gyandeep", R-9/139/6-A-1, Near Vishal School, LIC colony, Latur, Dist. Latur - 413531 (M.S.) India.

Editor : Dr. Balaji Kamble, Mob. 9423346913.

Scanned with CamScanner